# समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूं

## संकाय डिजिटल पत्रिका

**अंक -3 पाक्षिक 1 जून 2025**

हम आपके साथ संकाय की
**पाक्षिक (15 दिन की) रिपोर्ट**
साझा कर रहे हैं। (हर 15 दिन में ऐसी ही प्रेरणादायक जानकारी के साथ फिर से मिलेंगे।)

Saman_Sanskriti_Sankay

+91 9784762373, 9785442373, 9694442373

https://sss.jvbharati.org/ sss@jvbharati.org

**समण संस्कृति संकाय** का उद्देश्य बिना किसी उम्र, जाति या सीमा के जैन साहित्य, दर्शन और आध्यात्मिक मूल्यों का वैश्विक स्तर पर विस्तार करना है। संकाय द्वारा प्रस्तुत पाठ्यक्रम विश्व के सबसे लोकप्रिय जैन आध्यात्मिक पाठ्यक्रमों में से एक है। हम साहित्यिक क्षेत्र में भी समान रूप से सक्रिय हैं ताकि नई पीढ़ी तक इसका प्रभाव गहराई से पहुँच सके।

# साधना के प्रारंभ में कोई भी साधक सिद्ध नहीं हो जाता।

**आचार्यश्री तुलसी**

आलेख

## संसार और मोक्ष

संसार क्या है, मोक्ष क्या है, ये दो प्रश्न हैं । स्थान की दृष्टि से विचार किया जाए तो संसार और मोक्ष दोनों लोक में ही हैं। लोक की सीमा लांघकर न संसारी जीव आगे जाते हैं और न मुक्त जीव ही। स्वरूप की दृष्टि से कर्मरहित जीव मोक्ष है और कर्मसहित जीव संसार है। एक अपेक्षा से यह भी कहा जा सकता है कि जिसका चिंतन और आचरण सम्यक है, उसके लिए यह संसार ही मोक्ष है। इसके विपरीत जिसका चिंतन और आचरण सम्यक नहीं है, उसके लिए कहीं मोक्ष नहीं है।

### आश्रव संसार है और संवर मोक्ष

संसार हमारे लिए प्रत्यक्ष है और मोक्ष परोक्ष है । जो परोक्ष होता है, उसके संबंध में अनेक कल्पनाएं हो सकती हैं। भारतीय चिंतन में मोक्ष का भी कोई एक स्वरूप निश्चित नहीं है। जैन- दर्शन के अनुसार संसार और मोक्ष का कारण मनुष्य स्वयं है। उसका प्रवृत्तिमय जीवन संसार है तथा प्रवृत्तियों का निरोध मुक्ति है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आश्रव संसार है और संवर मोक्ष है। इस संदर्भ में आचार्य उमास्वाति ने लिखा है-

**आश्रवो भवहेतुः स्यात्, संवरो मोक्षकारणम् ।**
**इतीयमार्हती दृष्टिरन्यदस्याः प्रपञ्चनम्।।**

अपेक्षा है, लोग आश्रव और संवर को समझें। इन दोनों तत्त्वों को समझे बिना जैन - दर्शन के चिंतन को नहीं समझा जा सकता, जैन तीर्थंकरों की दृष्टि को नहीं पढ़ा जा सकता।

### स्वभाव और परभाव

जो व्यक्ति अपना आत्म - स्वभाव भूलकर विजातीय तत्त्वों / परभाव की भूलभुलैया में फंस जाता है, वह मोक्ष के निकट नहीं जा सकता। आत्मा का सजातीय तत्त्व/स्वभाव है - संवर| विजातीय तत्त्व/परभाव है-आश्रव। मिथ्यात्व, प्रमाद, कषाय आदि दुर्गुणों से विवश व्यक्ति परभाव में स्वभाव देखता है। यह परभाव का व्यूह न केवल मोक्ष प्राप्ति में बाधक है, अपितु स्वास्थ्य की दृष्टि से भी बाधक है, घातक है। चिकित्सा-विज्ञान के अनुसार उच्च रक्तचाप चिकित्सा-

विज्ञान के अनुसार उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रेशर) के रोगी को नमक से जितना परहेज करना चाहिए, उससे भी कहीं अधिक परहेज करना चाहिए क्रोध से दवा लेने पर भी मानसिक संतुलन के अभाव में स्वास्थ्य लाभ नहीं हो सकता।

वाचिक क्रोध तो बुरा है ही, पर इससे भी अधिक बुरे हैं आत्म-प्रदेशों में व्याप्त क्रोध के अणु । राजनीतिक दृष्टि से सीधी लड़ाई की अपेक्षा शीत युद्ध को अधिक भयंकर माना जाता है। रात-दिन के कलुषित विचारों से खाने और सोने के समय भी शांति नहीं मिलती। यह परभाव का परिणाम है।

## आनंद : कहां : कैसे

योगियों के संबंध में कहा गया है- नन्दन्ति योगीश्वराः - योगी बहुत प्रसन्न रहते हैं। इसका कारण यह है कि उनके जीवन में आनंद के बाधक तत्त्व नहीं होते । अहंभाव, गुस्सा, दंभचर्या, लालसा आदि उन्हें नहीं सताते। आत्मा सच्चिदानंदमय होती है। उस पर आवरण आने से शांति का भंग होता है। आनंद बाह्य पदार्थों में नहीं होता। उसके लिए कुछ पाना भी नहीं है। आत्मरमण ही आनंद है और यही आत्मा का स्वभाव है।

आनंद के लिए कुछ पाने की कोशिश करने से तनाव बढ़ता है। इसलिए कुछ पाने की चाह छोड़कर आनंद की सुरक्षा के लिए आत्मा में जमकर बैठे हुए घुसपैठियों को बाहर निकालने की जरूरत है। क्रोध, अभिमान, माया, लोभ, भय, जुगुप्सा आदि हमारे आत्मीय नहीं हैं। आत्मा के मैदान में इन शैतानों ने घुसपैठ कर रखी है। इन्हें चेतावनी देकर आत्मा के मैदान से बाहर निकाला जाए। इन विजातीय तत्त्वों की घुसपैठ मिट जाने के बाद आनंद स्वयं व्यक्त हो जाएगा ।

## दुःख का कारण

दुःख क्यों होता है, यह एक अहम प्रश्न है । पर में अपनापन दुःख का प्रमुख कारण है। व्यक्ति जिस वस्तु या व्यक्ति को अपना मानता है, वह वस्तु जब चली जाती है अथवा जब उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, तब उसके जाने का दुःख होता है। यहां व्यक्ति दोहरी भूल करता है। प्रथम वह पर में स्व की बुद्धि बना लेता है और फिर उसके जाने का दुःख करता है। यदि मनुष्य हर स्थिति में तटस्थ रहता है तो वह कभी दुखी नहीं हो सकता।

कोई व्यक्ति किसी धर्मशाला में रहता है। आस-पास के कमरों में अनेक व्यक्ति आते हैं और चले जाते हैं। उनके आने से उसे आनंद नहीं होता और जाने से दुःख नहीं होता, क्योंकि उनके प्रति उसका कोई लगाव नहीं है, लेकिन जब किसी के साथ उसका काल्पनिक संबंध जुड़ जाता है, तब उसके वियोग से दःख का अनुभव होता है।

## जैसी तुम्हारी इच्छा

फकीर लेटा हुआ था। अचानक उसके कानों में आवाज आई। उसे ऐसा लगा कि कोई उसे पुकार रहा है। वह चौंककर उठा। उसने गौर से चारों ओर नजर दौड़ाई। पर कोई भी दिखाई नहीं दिया।

# दुः ख मुक्ति का एक ही उपाय है भीतर की गहराई में जाओ

**आचार्यश्री महाप्रज्ञ**

आलेख

## कहां है चेतना ?

भारतीय चिंतन में और दार्शनिक साहित्य में दो शब्द बहुत प्रचलित हैं- शाश्वत और अशाश्वत । शाश्वत कभी नष्ट नहीं होता। अशाश्वत नाना रूप धारण करता रहता है । हमारी कठिनाई यह है कि अशाश्वत तो हमारे सामने है और शाश्वत सामने नहीं है। आदमी की यह प्रवृत्ति है कि जो सामने है, प्रत्यक्ष है, उस पर जितना भरोसा करता है, परोक्ष पर उतना भरोसा नहीं करता। यही कारण है कि सारा झगड़ा अशाश्वत के लिए है। शाश्वत के लिए कोई संघर्ष नहीं, कोई झगड़ा नहीं ।

हम जिस भवन में प्रवास कर रहे हैं, वह तो प्रत्यक्ष है, किंतु बनाने वाला कहां है? झगड़ा बनाने वाले के लिए नहीं, जो बन गया है, उसके लिए है। शाश्वत के लिए कोई संघर्ष नहीं होता । दार्शनिक लोग कहते हैं कि हम शाश्वत को नहीं मानते, इसलिए अशाश्वत लड़ाई का कारण बनता है। अगर शाश्वत को समझने का प्रयत्न करें तो अशाश्वत के लिए कोई संघर्ष नहीं होगा। 'मेरा है' - यह भावना नहीं जागेगी।

### शाश्वत की ओर

हमें शाश्वत का बोध नहीं है। मरने के बाद कहां जाना है, यह वे लोग नहीं सोचते, जो हिंसा में लिप्त हैं। वे लोग इस बात पर तनिक भी विचार नहीं करते, जो दिन-रात अनीति और अन्याय के रास्ते पर चल रहे हैं। वे लोग भी नहीं सोचते, जो आदमी को गाजर-मूली की तरह काट देते हैं। वे लोग भी नहीं सोचते, जो मूक प्राणियों की हिंसा करते हैं। अनावश्यक हिंसा करने वाले यह कभी नहीं सोचते कि मैं शाश्वत नहीं हूं और मरने के बाद मेरी भी कोई गति होगी। उन्हें स्वप्न में भी इस बात का ख्याल नहीं आता है। यदि शाश्वत का चिंतन हमारे सामने रहे तो फिर दुनिया में अन्याय और अपराध बहुत कम होंगे

हमारी विवशता है कि इन आंखों से हम शाश्वत को नहीं देख सकते। नमि राजर्षि मिथिला को छोड़कर जा रहे हैं। उस समय ब्राह्मण वेशधारी दिव्यात्मा ने कहा-'२,जन्! आप कार्य

को अधूरा छोड़कर जा रहे हैं। पहले निर्माणाधीन राजमहल को पूरा कराएं और भी राज्य के जो काम अधूरे पड़े हैं, उन्हें पूरा कराएं, फिर संन्यासी बनें।'

नमि राजर्षि बोले- 'मैं अपने ही घर का निर्माण करने जा रहा हूं। अशाश्वत का निर्माण मैंने बहुत कर लिया। अब उस घर में जा रहा हूं, जिसे कभी छोड़ना न पड़े।

**संसयं खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं ।**
**जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥**

किराये के घर में रहने पर एक दिन उसे छोड़ने की स्थिति आ जाती है। नमि राजर्षि शाश्वत घर की ओर प्रयाण कर गए। कठिनाई यह है कि शाश्वत में भरोसा नहीं होता। जिस पर भरोसा नहीं होता, उससे कोई रुख जोड़ना नहीं चाहता ।

दो आदमी थे। पड़ोस में नजदीक ही रहते थे, इसलिए यदाकदा एक दूसरे के सहयोग की जरूरत पड़ जाती थी। दोनों में से एक कुछ ज्यादा स्वार्थी वृत्ति का था। वह उससे तो कोई चीज मांग लेता, किंतु अपनी चीज देने में वह बहाने बनाता था। एक दिन वह स्वार्थी व्यक्ति के यहां पहुंचा और बोला- 'आज एक दिन के लिए तुम अपना गधा दे दो। मुझे जरूरी काम है।' स्वार्थी वृत्ति के आदमी ने कहा- 'तुम देर से आए हो, गधे को तो मेरा लड़का बाजार लेकर गया है।' वह आदमी निराश होकर लौटने लगा, तभी घर के आंगन में बंधे गधे ने जोर से आवाज की। मांगने वाले ने कहा- 'इतनी-सी बात पर तुम झूठ बोल गए। गधा तो तुम्हारे घर के भीतर बंधा है।'

उस आदमी ने कहा- 'मैं कह रहा हूं उस पर तुम्हें भरोसा नहीं और गधे की बात पर इतना भरोसा। मैं ऐसे आदमी से बात नहीं करता, जो आदमी से ज्यादा गधे पर भरोसा करता है। तुम मेरे दरवाजे से चले जाओ।'

## काल पर विजय

आदमी किस पर विश्वास करे, आदमी पर या गधे पर ? हमें भी किसी न किसी पर अपना विश्वास करना ही होगा। जीवन पर विश्वास नहीं किया जा सकता, वह नश्वर है, कभी भी समाप्त हो सकता है। कोई भी इस अटल सत्य में परिवर्तन नहीं कर सकता। काल पर किसी का वश नहीं ।

महाभारत का प्रसंग है। किसी याचक ने युधिष्ठिर से धन की याचना की । युधिष्ठिर किसी आवश्यक मंत्रणा में व्यस्त थे । उन्होंने याचक को कहा- 'तुम कल आओ, तुम्हें तुम्हारा अभीष्ट मिल जाएगा।'

भीम ने बड़े भाई की बात सुनी। एक क्षण विचार किया और फिर उन्होंने अपना शंख फूंक दिया। शंखनाद सुन उनके अन्य भाई और मित्रगण तत्काल वहां उपस्थित हो गए और पूछा- 'भीम ! यह आप क्या कर रहे हैं ?'

भीम ने कहा- 'मैं अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहा हूं।'

'किस बात की प्रसन्नता ?'

'बड़े भ्राता युधिष्ठिर ने काल पर विजय प्राप्त कर ली है।'

**जो आदमी अपने कर्त्तव्य को नहीं समझता और न कर्त्तव्य का पालन करता है, वह अनिष्ट को प्राप्त हो सकता है।**

**आचार्यश्री महाश्रमण**

आलेख

## भिन्नता का हेतु कर्म

हमारी दुनिया में भिन्नता है, पृथकता है। पौद्गलिक जगत में भी मिन्नता है और जीव जगत में भी भिन्नता है। कहीं बहु मंजिला मकान है, कहीं एक मंजिल का ही है। कहीं बड़ा पहाड़ है, कहीं छोटा पहाड़ है। कहीं भूमि ऊबड़खाबड़ है, कहीं समतल है। कहीं खम्भा है, कहीं आंगन है। जीव जगत में भी कोई हाथी है, कोई घोड़ा है। कोई ऊंचा शरीर वाला है, कोई ठिगना है। कोई एकेन्द्रिय है, कोई पंचेन्द्रिय है। जीव जगत की इस भिन्नता के संदर्भ में मुनि मेघ संबोधि की भाषा में भगवान महावीर से प्रश्न करता है-

**दृश्यते जीवलोकोऽयं, नानारूपे विभक्तिमान्।**
**नानाप्रवृत्तिं कुर्वाणः कर्त्तृत्वं कस्य विद्यते ॥3/35॥**

भगवन्! यह जीव-जगत विभिन्न रूपों में विभाजित दिखाई दे रहा है और यह नाना प्रकार की प्रवृत्तियां करता है। इन सबके पीछे किसका कर्तृत्व है? यह मैं जानना चाहता हूं।

यह जीवों की भिन्नता क्यों होती है? सारे जीव आदमी क्यों नहीं बन जाते या सारे जीव देवता क्यों नहीं बन जाते? पशुओं में सारे घोड़े ही घोड़े क्यों नहीं बन जाते, अलग-अलग क्यों बनते हैं? इस अलगाव का, भेद का जिम्मेदार कौन है ? जरूर कोई तत्त्व है, वह सबको बनाता होगा। संबोधि में इस प्रश्न का उत्तर देते हुए भगवान महावीर ने कहा है-

**विभक्तिः कर्मणा लोके कर्मास्ति चेतनाकृतम् ।**
**चेतना सास्रवा तेन, कर्माकर्षति संततम् ।।3/36।**

यह सारा विभाजन कर्म द्वारा निष्पन्न होता है। कर्म करने वाली है चेतना। यह आस्रवयुक्त होती है इसलिए कर्मों का आकर्षण सतत करती रहती है।

जैसे कर्म बंधते हैं, उनका विपाक होता है। फिर उस विपाक के अनुसार जीवों में भिन्नता हो जाती है। एक आदमी बहुत बुद्धिमान, बहुत समझदार, पढ़ा-लिखा है। दूसरा आदमी बहुत कम बुद्धि वाला, मानसिक रूप से अविकसित दिमाग वाला, कमजोर स्मृति वाला है, यह बौद्धिक भिन्नता हो गई। एक आदमी सत्तर वर्ष की उम्र होने पर भी शरीर से बड़ा सुडौल, मजबूत, स्वस्थ, परिश्रमशील, एक दिन में पन्द्रह-बीस किमी. चलने की क्षमता रखता है। दूसरा आदमी अभी

पचीस वर्ष का भी नहीं हुआ, पर बीमारियां लग गईं, ज्यादा श्रम नहीं कर पाता, ज्यादा चल नहीं सकता, कमजोरी महसूस करता है, यह शारीरिक स्वास्थ्य की भिन्नता हो गई। ऊपरी सौंदर्य की दृष्टि से देखें तो एक आदमी बड़ा आकर्षक चेहरे वाला, सुंदर शरीर वाला, प्रामाणोपेत शरीर वाला, देखते ही लगता है कोई राजकुमार बैठा है। दूसरे आदमी का शरीर टेढ़ा-मेढ़ा, कद ठिगना, चेहरा भी सुंदर नहीं है। यह सौंदर्य और असौंदर्य की भिन्नता हो गई।

एक आदमी की बड़ी इज्जत होती है। वह जैसे ही आता है, लोग उसको प्रणाम करते हैं, माला पहनाते हैं, स्वागत करते हैं, बहुत सम्मान देते हैं। दूसरा आदमी आता है तो उसे कोई सम्मान नहीं देते, कोई प्रणाम नहीं करते, अपितु उसकी उपेक्षा करते हैं। यह सम्मान और असम्मान की भिन्नता हो गई। एक आदमी कोई बात कहता है तो लोग बड़े ध्यान से उसकी बात को सुनते हैं, उसकी बात को तवज्जो देते हैं, उसकी बात को मानते भी हैं। वह किसी काम के लिए कहे तो तत्काल उसको स्वीकार कर लेते हैं। दूसरा आदमी कई बार बोल देता है तो भी उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया जाता है। यह अंतर भी देखने को मिल सकता है। एक आदमी कोई कार्य करता है तो सफलता मिल जाती है, काम श्रेय तक पहुंच जाता है। दूसरा आदमी कार्य करता है तो बार-बार बाधाएं आती हैं, काम बंद हो जाता है। यह भिन्नता भी देखने को मिलती है।

एक आदमी स्वभाव से बड़ा शांत है। वह शांति से बात करता है, शांति से अपना काम करता है। उसे कोई कुछ कह भी दे तो गुस्सा नहीं करता । दूसरा आदमी उग्र स्वभाव वाला है। थोड़ा-सा कुछ कह देने पर तत्काल गुस्से में, आवेश में आ जाता है। यह भी फर्क देखने को मिल सकता है। एक आदमी बहुत सरलता से बात करता है, कोई दांवपेच नहीं करता, जबकि दूसरा आदमी बात-बात में छल-कपट, दांवपेच करता रहता है। एक आदमी बड़ा मृदु स्वभाव वाला है और दूसरा आदमी अहंकार में रहता है। पैसे का अहंकार, ज्ञान का अहंकार, तपस्या आदि का अहंकार करता रहता है। एक आदमी संतोषी है। जो मिल गया, उसमें संतुष्ट रहता है। दूसरे आदमी की आकांक्षाएं बहुत ज्यादा हैं। कभी यह चाहिए, कभी वह चाहिए, आगे से आगे आकांक्षा बढ़ती जाती है। एक आदमी का आयुष्य लंबा होता है, दूसरा आदमी बहुत छोटी उम्र में चला जाता है। इस प्रकार अनेक भिन्नताएं देखने को मिल सकती हैं। यह तो मात्र मनुष्य की भिन्नता की बात बताई गई है। पशुओं में भी कितना भेद होता है। जीवों की इस भिन्नता का जिम्मेदार कर्म होता है। जैसा कर्म किया हुआ होता है, उसके अनुसार परिणाम प्राप्त होते हैं और कर्म का जिम्मेदार स्वयं कर्म करने वाली चेतना होती है।

आज हमें जो कुछ उपलब्ध है, जैसा शरीर मिला है, स्वास्थ्य आदि मिला है, उसमें संभव है हमारे पिछले जन्मों के कर्मों का योग हो। आदमी के जीवन का जो कर्तृत्व है या व्यक्तित्व है, उसकी व्याख्या कर्मवाद के आधार पर अच्छी हो सकती है।

# अषाढ़भूति आचार्य

मुनि छत्रमल्ल

'अषाढ़ भूति' एक समर्थ आचार्य थे। इनकी शिष्य-सम्पदा पूरे सौ शिष्यों की थी जो शालीन और साधना-रत थी । संयोग की बात सभी शिष्य एक-एक करके आचार्य की आंखों के सामने दिवंगत हो गये। जब लघु शिष्य भी उनकी आंखों के सामने ही दिवंगत होने लगा, तब उनका दिल दहल उठा। कुछ अनास्था के भाव उभर आये। असहायावस्था में ऐसा होना सहज भी है। अतः दिवंगत होते शिष्य से कहा - 'वत्स! तू यदि स्वर्ग में जाये तो वहां से आकर मुझे वहां की स्थिति बताना। शिष्य कालधर्म प्राप्त कर गया। देव भी बना, पर वहां के ऐश्वर्य में इतना लुब्ध हो गया कि वहां से आकर गुरु को कहने की बात ही भूल बैठा। इधर उसके न आने पर गुरुजी को पक्का विश्वास हो गया कि न स्वर्ग है, न नरक और न ही पुण्य-पाप, न मोक्ष आदि का कोई अस्तित्व है। ये सब तो यों ही अपना गुरुडम जमाने की धर्माचायों की धांधली है।

साधु- व्यक्ति की श्रद्धा जब तक बलवती और दृढ़ रहती है, तब तक व्यक्ति अपने आपको उस पर पूर्ण रूप से न्योछावर कर देता है, पर जब वह हिल जाती हैं, तब उसे कहीं का भी नहीं छोड़ती। आचार्यजी भी अनास्था के दलदल में बुरी तरह धंस चुके थे । अतः इस निर्णय पर आ गये कि वेश का परित्याग करके घर-ग्रहस्थी में जाकर जीवन की मौज - बहारें लूटनी चाहिए। आखिर व्यर्थ का कायक्लेश सहा भी क्यों जाये? स्वर्ग नरक तो हैं ही नहीं, यदि होते तो मेरा प्रिय शिष्य लौटकर क्यों नहीं आता? वह वचनबद्ध जो हो चुका था । यही विचार कर गुरुजी घर की ओर बढ़े।

उधर उस शिष्य देव को भी गुरुजी को दिये हुए अपने वचन का स्मरण हो आया। उसने जो अपधिज्ञान से पता लगाया तो गुरुजी की इस बदली हुई मनोदशा पर दंग रह गया। अपनी की हुई असावधानी पर अनुताप करता हुआ वहां आया। उसने सोचा — गुरुजी जा तो रहे हैं, पर उनके संभलने के दो ही पहलू हैं। यदि अब भी दिल में दया और आंखों में लज्जा होगी तो मेरे द्वारा स्वर्ग का परिचय देने पर विश्वास जम सकता है, अन्यथा नहीं। यों विचार कर उनकी दया को परखने के लिए उसने अपनी देवशक्ति विकुर्वित की ।

गुरुजी को निर्जन जंगल में छः अबोध बच्चे मिले जो गहनों से लदे हुए थे। गुरुजी ने जब उनका परिचय जानना चाहा, तब वे बोले--' हम अपने अभिभावकों के साथ आपश्री के दर्शन करने चले थे, पर हम सब पथ भूल गये। सभी तितर-बितर हो गये।' नाम पूछने पर छहों ने अपना-अपना नाम बताया— पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वासुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक |

षट्कायिक जीवों के नाम पर इनके नाम सुनकर गुरुजी ने इन्हें धर्म-निष्ठ श्रावकों के पुत्र जाना और सोचा- इन जीवों की रक्षा करते तो सारा जीवन बिता दिया, लेकिन अब तक कोई सुफल नहीं मिला। पगचंपी करने वाला एक शिष्य भी पास नहीं रहा, सभी धोखा दे गये। अब तो इन्हें मारकर इनके सारे जेवर हथिया लेने चाहिए, क्योंकि धन के बिना गृहस्थवास का स्वाद ही क्या? अब मैं धन कमाकर पर्याप्त धन एकत्रित कर सकूं, ऐसी व्यापारिक क्षमता तथा शारीरिक क्षमता भी मुझमें अवशेष नहीं है। बस, फिर क्या था । उनके कंठ मोस, एक-एक करके सभी को मौत के घाट उतार दिया और उनके सारे आभूषण शीघ्र ही झोली में डाल लिये ।

अब लज्जा की परख करने के लिए देव ने श्रावकों का समूह गुरुजी के सामने ला खड़ा किया। चारों ओर वंदना की ध्वनि है, आहार- पानी की पुरजोर प्रार्थना है। गुरुजी मना कर रहे हैं। भोजन लें तो किसमें ? भाजनों में तो जेवर भरे पड़े हैं। फिर भी श्रावकों ने अत्याग्रह करके झोली को बलात् खोला तो पार में उन नामांकित जेवरों को देखकर हत्या का आरोप लगाने लगे। अपने पापों का भंडाफोड़ हो जाने पर गुरुजी को शर्मिन्दा होना ही था। आंखें मूंदें प्रस्तर की मूर्ति से बने खड़े हैं। मन में अन्यधिक ग्लानि है । जाएं भी तो कहां जाएं ! कहें भी तो क्या और किसे ? धरती में समाना चाहते हैं, पर पृथ्वी भी भला स्थान देने को कब तैयार हो ? उलझन भरी गुरुजी की सारी मनःस्थिति देखकर देव सामने प्रकट हुआ। अपना आत्मनिवेदन करते हुए, पुनः क्षमा-याचना की।

अषाढ़भूति ने साश्चर्य कहा- वत्स ! तू कहां ? शिष्य देव ने कहागुरुजी ! आप कहां से कहां पहुंच गये !

अषाढ़भूति ने अपने अनास्था के कुहरे को बहुत ही शीघ्रता से हटाया। निःशल्य आत्मालोचन से विशुद्ध बने। संयम की उत्कृष्ट कोटि की साधना में पहुंचकर सकल कर्म क्षय किये और मोक्ष प्राप्त कर लिया ।

# जीव अजीव कार्यशाला-2025

**"गुरु इंगित की आराधना,**
**पचीस बोल की धारणा"**

परम पूज्य युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की मंगल प्रेरणा एवं इंगितानुसार समण संस्कृति संकाय द्वारा "जीव अजीव कार्यशाला -2025" शुरू की गई जिसमें जूम मीटिंग के द्वारा स्वाध्याय करवाया गया तथा मॉक टेस्ट व ट्रायल टेस्ट के माध्यम से तैयारी करवाई गई ।

जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमार जी के सफल निर्देशन में जीव अजीव कार्यशाला 2025 देश-विदेश में आयोजित हुआ। परीक्षा संचालन में अध्यापन टीम, तकनीकी विभाग, लाडनूं कार्यालय व साहित्य विभाग का सहयोग प्राप्त हुआ अत: सभी के प्रति आभार।

25 मई 2025 को इस कार्यशाला की फाइनल परीक्षा आयोजित की गई जिसमें 1996 प्रतिभागियों ने रजिस्ट्रेशन करवाया, 1319 प्रतिभागियों की उपस्थिति रही। परीक्षा दो Slot में सानंद संपन्न हुई। परीक्षार्थियों ने अच्छे अंकों से परीक्षा उत्तीर्ण की। फाइनल परीक्षा का परिणाम घोषित करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

यह रिजल्ट Submission Time के आधार पर हैं।
Answer Key का PDF संलग्न है।
सभी परीक्षार्थी अपना रिजल्ट समण संस्कृति संकाय के वेबसाइट पर देख सकते हैं।

35% से अधिक अंक प्राप्त परीक्षार्थीयों को पास घोषित किया गया है।

**India & Asian Countries**
प्रथम 20 परीक्षार्थियों की वरीयता क्रम के अनुसार सूची प्रेषित की जा रही है।

**USA & Europe**
प्रथम 3 परीक्षार्थियों की वरीयता क्रम के अनुसार सूची प्रेषित की जा रही है।
जीव अजीव कार्यशाला के प्रायोजक डॉ. सुनील जी एवं डॉ. सुनीता जी आंचलिया, USA हैं।
समण संस्कृति संकाय, जीव-अजीव कार्यशाला के सभी परीक्षार्थियों के प्रति हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित करता है।

# जीव अजीव कार्यशाला 2025 फाइनल रिजल्ट

## India & Asian Countries

### 1st Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 15:08:55

**Arham Dhakad**
Center - Sion Koliwada

### 2nd Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 20:09:10

**Pratibha Baid**
Center - Sujangarh

### 3rd Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 20:12:59

**Rekha Dhakad**
Center- Sion Koliwada

### 4th Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time :20:24:40

**Sarita Nahata**
Center - Tezpur

### 5th Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 15:31:34

**Vibha Anchaliya**
Center - Nokha

### 6th Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 20:32:29

**Harshit Bhura**
Center - Nokha

### 7th Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 20:34:14

**Vanita Jain**
Center - Bhiwani

### 8th Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 20:41:21

**Sakshi Ghosal**
Center - Rajaldesar

### 9th Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 20:50:45

**Rajesh Lodha**
Center - Kankroli

### 10th Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 15:55:40

**Bobby Jain**
Center - Kantabanji

### 11th Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 21:05:38

**Khushbu Jain**
Center - Hisar

### 12th Rank
Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 21:07:26

**Archana Soni**
Center - Kankroli

### 13th Rank
Marks Obtained : 198/200
Submission Time : 15:15:44

**Monika Nolkha**
Center - Lunkaransar

### 14th Rank
Marks Obtained : 198/200
Submission Time : 20:17:24

**Mamta Singhi**
Center - Biratnagar

### 15th Rank
Marks Obtained : 198/200
Submission Time : 20:17:42

**Santosh Banthia**
Center - Hanumangarh Town

### 16th Rank
Marks Obtained : 198/200
Submission Time : 15:20:05

**Mamta Shah**
Center - Bangalore-Gandhinagar

### 17th Rank
Marks Obtained : 198/200
Submission Time : 15:21:42

**Elisha Shah**
Center - Navsari

### 18th Rank
Marks Obtained : 198/200
Submission Time : 15:21:46

**Neha Banthia**
Center- Hanumangarh Town

### 19th Rank
Marks Obtained : 198/200
Submission Time : 20:24:52

**Usha Baid**
Center - Jodhpur Sardarpur

### 20th Rank
Marks Obtained : 198/200
Submission Time : 15:25:02

**Bharti Baid**
Center - Jodhpur Sardarpur

## USA & Europe

### 1st Rank
Marks Obtained : 190/200
Submission Time : 21:16:59

**Kanmal Dugar**
Center - Orlando

### 2nd Rank
Marks Obtained : 186/200
Submission Time : 20:22:26

**Sonali Shroff**
Center - USA

### 3rd Rank
Marks Obtained : 178/200
Submission Time : 20:43:19

**Ankitha Surana**
Center - USA

## विशेष सम्मानित वरीयता प्राप्त आगम मंथन प्रतियोगिता सह संयोजिका

*

Marks Obtained : 200/200
Submission Time : 16:05:45

**Mangla Kundalia**
Center - Delhi
Krishna Nagar

विशेष सूचना
जीव अजीव कार्यशाला के सभी ज्ञानार्थी आगम मंथन प्रतियोगिता स्वाध्याय ग्रुप से अवश्य जुड़े।
आगम अंतगडदसाओ का स्वाध्याय **समणी मलयप्रज्ञाजी U.K.** द्वारा
जून माह के प्रथम सप्ताह से करवाया जाएगा।

SCAN ME

## जीव अजीव कार्यशाला टीम

समण संस्कृति संकाय की नई वेबसाइट - एक नई दिशा की ओर

## Sankay 3.0

हमें यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि समण संस्कृति संकाय, जो जैन दर्शन, अध्यात्म और नैतिक मूल्य परक शिक्षा को समर्पित है, अब एक वेबसाइट वर्जन 3.0 के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है।

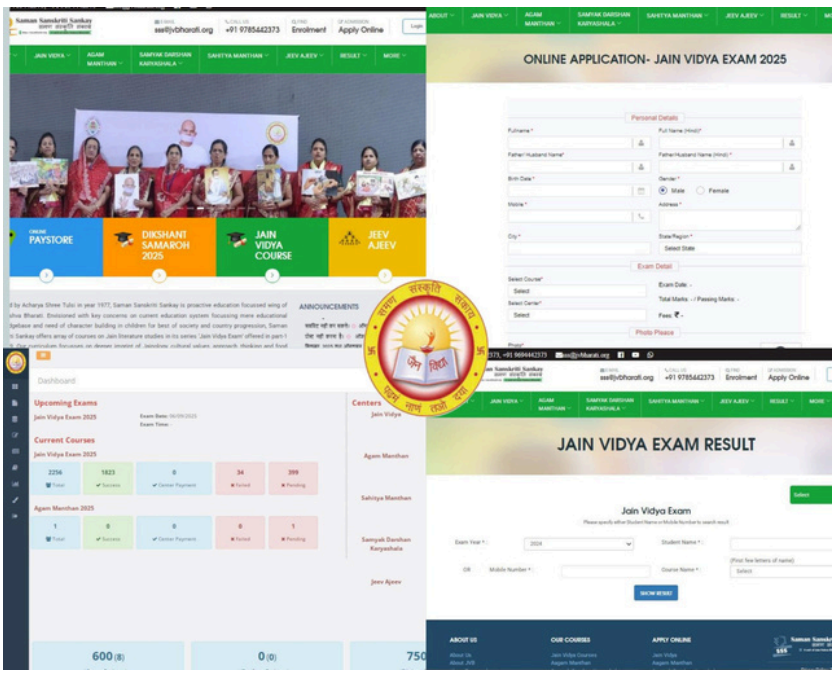


इस अपग्रेड वेबसाइट के लाभ

- छात्रों के लिए कोर्स, परीक्षा और परिणाम की जानकारी एक स्थान पर
- शत-प्रतिशत ऑनलाइन कार्य करने वाली वेबसाइट
- शोधपरक गतिविधियों और अन्य गतिविधियों की डिजिटल झलक
- अध्यात्म, संस्कृति और नैतिकता से जुड़े महत्वपूर्ण लेख और अन्य पठनीय सामग्री
- ऑनलाईन अध्ययन सामग्री एवं ऑनलाइन अध्यापन सुविधा
- संकाय से संबधित समस्त नवीनतम सूचनाएँ और घोषणाएँ

समस्त पांच कोर्स के पृथक-पृथक सेन्टर, अपने -अपने सेन्टर का पृथक लॉग इन, संभागवार लॉग-इन आदि

★ यह वेबसाइट न केवल संकाय की कार्यप्रणाली को पारदर्शी बनाएगी, बल्कि छात्रों, शोधार्थियों और श्रद्धालुओं को भी प्रत्यक्ष रूप से जोड़े रखने का सेतु बनेगी। संकाय को तकनीकी रुप से मजबूत बनाने का यह तीसरा पायदान है।

आइए, इस डिजिटल पहल का स्वागत करें और ज्ञान, संस्कृति और साधना की इस यात्रा में सहभागी बनें

## "जाने जैन इतिहास को" प्रतियोगिता

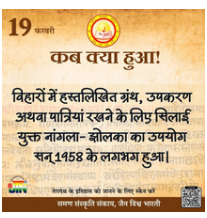


- प्रतियोगिता Online होगी जिसमें Objective Question होंगे।
- **3 Mock Test** सम्बोधि एप्प पर अपलोड किये गए हैं और एक ट्रायल टेस्ट आयोजित किया गया।
- द्वितीय ट्रायल टेस्ट 12 जून 2025 को होगा।
- ट्रायल टेस्ट में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य हैं।
- **15 जनवरी 2026** को फाइनल प्रतियोगिता होगी।
- उत्तीर्ण ज्ञानार्थियों को संकाय द्वारा प्रमाण पत्र दिए जायेगे।
- वरीयता प्राप्त को गुरुदेव के सानिध्य में सम्मान किया जायेगा।
- विभिन्न प्रकार के पुरस्कार होगें।

# जाने जैन इतिहास को

## मार्च माह के पोस्ट

- तेरापंथ द्विशताब्दी के अवसर पर राजनगर में संतों के लिए सध्वियों से पानी मंगवाना बंद कर दिया गया।
- सन् 1977 से 70 वर्ष के बाद समुच्चय के सभी कार्यों से छूट रहने काप्रावधान हुआ।
- सन् 1961 में आमेट मर्यादा महोत्सव के अवसर पर साधु-साध्वियों को सायं कालीन उष्ण आहार की आज्ञा प्रदान की गई।
- तेरापंथ के तीन आचार्यो-आचार्य भिक्षु स्वामी, आचार्य जीतमलजी एवं आचार्य तुलसी से संबधित डाक टिकिट जारी हुई।
- सन् 1961 बीदासर चातुर्मास में प्रथम तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया।
- सन् 1961 में प्रतिक्रमण के बाद आलोचना (आलोयणा) ग्रहण की विधि प्रारंभ हुई।
- सन् 1963 में आचार्य की सन्निधि में किसी गृहस्थ की प्रथम स्मृति सभा आयोजित हुई।
- सन् 1963 से प्रत्येक साधु साध्वी के लिए सेवाकेंद्र में सेवा देना अनिवार्य किया गया।
- सन् 1965 से मुखवस्त्रिका पर वारनिश लगाना मान्य किया गया।
- सन् 1966 से प्रत्येक साधु साध्वी की स्मृति सभा आयोजित होने लगी।
- सन् 1966 से जुलूस में साध्वियों की सहभागिता प्रारंभ हुई ।
- सन् 1966 से रेल के इंजन का पानी लेने की विधि बनी।
- तेरापंथ धर्मसंघ मे सर्वप्रथम वि स. 1967 मे जयाचार्य कृत भ्रमविध्वंसन् कृति का प्रकाशन हुआ।
- तेरापंथ धर्मसंघ मे सुहागिन अवस्था मे सबसे कम उम्र मे दीक्षित होने वाली साध्वीश्री मगनांजी राजलदेसर थी।
- जुगुप्सनीय कुलों की बस्ती में व्याख्यान

- तेरापंथ धर्मसंघ मे पंचरंगी, सतरंगी तप का प्रारम्भ वि. स. 1925 जोधपुर में हुआ।
- बादशाह अकबर के दरबार में जैन मुनि हीर विजय जी का सम्मान हुआ।
- तेरापंथ के अंतरिमकाल मे दो चारित्रात्माएं मुनिश्री तेजमालजी और साध्वीश्री धन्नाजी ने संयम ग्रहण किया।
- तेरापंथ धर्मसंघ मे सर्वप्रथम चारित्रात्माओ की अंतिम यात्रा में महिलाओ की सहभागिता का क्रम वि. स. 2017 मे प्रारम्भ हुआ।
- सन् 1966 हिसार मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्य श्री तुलसी ने निकाय व्यवस्था का सूत्रपात किया।
- सन् 1966 से रजोहरण एवं प्रमार्जनी का प्रतिलेखन एक बार निर्णीत हुआ।
- सन् 1966 से तख्तों के बने मंच पर बैठना स्वीकृत हुआ।
- सन् 1967 में तेरापंथ धर्मसंघ में साधु संस्था द्वारा प्रथम बार माइक का प्रयोग हुआ।
- सन् 1967 से आचार्य के लिए प्रयुक्त संबोधनों में परिवर्तन आया।
- सन् 1969 आचार्य तुलसी की दक्षिण यात्रा में विज्ञप्ति का लेखन प्रारंभ हुआ।
- सन् 1969 से संघीय स्तर पर अक्षय तृतीया का आयोजन प्रारंभ हुआ।
- सन् 1970 से झोली पल्ला आदि धोने के लिए सर्फ का उपयोग प्रारंभ हुआ।
- सन् 1971 में हाथ ठेला (रेडी) जैसा उपयुक्त साधन काम लेने का निर्णय लिया गया।
- सन् 1972 से सिलाई किया हुआ चोलपट्टा एक से अधिक रखना साधु के लिए स्वीकृत हुआ।
- सन् 1972 में सहज विद्युत के प्रकाश में पढ़ने का निर्णय लिया गया ।
- सन् 1965 में बिना चूलिये के कपाट यातना पूर्वक खोलने की आज्ञा प्रदान की गई।

# जैन विद्या परीक्षा पाठ्यक्रम-2025

| जैन विद्या कोर्स नाम | संस्करण | परीक्षा शुल्क |
|---|---|---|
| जैन विद्या भाग-1 हिन्दी | 2023 | 120/- |
| जैन विद्या भाग-1 अंग्रेजी | **PDF Available Only** | - |
| जैन विद्या भाग-2 हिन्दी | 2023 | 120/- |
| जैन विद्या भाग-2 अंग्रेजी | **PDF Available Only** | - |
| जैन विद्या भाग-3 हिन्दी | 2022 | 120/- |
| जैन विद्या भाग-3 अंग्रेजी | **PDF Available Only** | - |
| जैन विद्या भाग-4 हिन्दी | 2023 | 120/- |
| नवीन श्रावक प्रतिक्रमण- हिन्दी | | |
| जैन विद्या भाग-4 अंग्रेजी | **PDF Available Only** | - |
| नवीन श्रावक प्रतिक्रमण- अंग्रेजी | | |
| जै.वि.भाग-5 जैन तत्त्व विद्या खण्ड-1 | 2021 | 180/- |
| जै.वि.भाग-5 जैन परम्परा का इतिहास | | |
| जै.वि.भाग-6 जैन तत्त्व विद्या खण्ड 2-3 | 2023 | 180/- |
| जै.वि.भाग-6 श्रावक संबोध (आचार्य तुलसी) | 2021 | |
| जै.वि.भाग-7 भिक्षु विचार दर्शन | 2022 | 180/- |
| जै.वि.भाग-7 जीव-अजीव | 2021 | |
| जै.वि.भाग-8 श्रमण महावीर- अध्याय 1 से 46 | 2021 | 250/- |
| जै.वि.भाग-8 जैन दर्शन मनन और मीमांसा (आचार मीमांसा) | 2023 | |
| जै.वि.भाग-9 आचार्य भिक्षु | 2023 | 250/- |
| जै.वि.भाग-9 जैन दर्शन मनन और मीमांसा (ज्ञान मीमांसा) | | |
| जैन विद्या भाग 1-2 हिन्दी | 2023 | 180/- |
| जैन विद्या भाग 1-2 अंग्रेजी | **PDF Available Only** | 180/- |
| जैन विद्या भाग 3-4 हिन्दी | **उपरोक्त लिखे अनुसार** | 250/- |
| जैन विद्या भाग 3-4 अंग्रेजी | **PDF Available Only** | 250/- |
| जैन विद्या भाग -5 प्रवेश, हिन्दी (भाग1-4) | **उपरोक्त लिखे अनुसार** | 250/- |
| जैन विद्या भाग -5 Ent अंग्रेजी (भाग1-4) | **PDF Available Only** | 250/- |

**सभी पुस्तकों के मुल्य में 50% Discount हैं।**

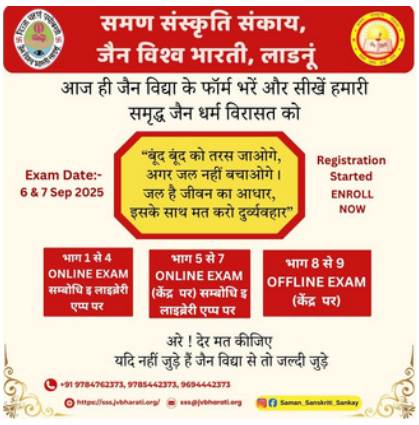

# आगम मंथन प्रतियोगिता

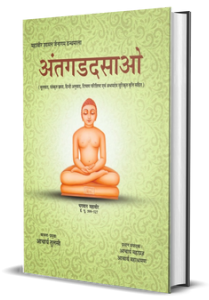


- इस प्रतियोगिता हेतु वर्ष 2025 के लिए **"अंतगडदसाओ"** आगम का चयन हुआ है। इस वर्ष आगम मथंन प्रतियोगिता ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों तरह से आयोजित होगी।
- प्रश्न पुस्तिका ऑनलाइन प्रविष्ट करने की तारीख 15 अक्टूबर 2025 और ऑफलाइन प्रश्न पुस्तिका 30 सितम्बर 2025 तक होगी।
- ऑनलाइन प्रश्न पुस्तिका का मूल्य 100 रुपये तथा ऑफलाइन प्रश्न पुस्तिका का मूल्य 200 रुपये है। आगम का मूल्य 800 रुपये है जिसमें 50% छूट प्राप्त होगी। अर्थात 400 रुपये होगा।

## अंतगडदसाओ

- **समणी मलयप्रज्ञाजी UK** द्वारा जून से Zoom Meeting के माध्यम से स्वाध्याय करवाया जा रहा हैं। अत: आप भी व्हाट्सएप्प ग्रुपों से जुड़े।

Scan Me

# दीक्षांत समारोह- 2025

## दीक्षांत समारोह अहमदाबाद रजिस्ट्रेशन - 2025

**सादर जय जिनेन्द्र** 🙏

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित दीक्षांत समारोह आचार्य श्री महाश्रमण जी के सानिध्य में अहमदाबाद चातुर्मास प्रवास, 28 जुलाई से 30 जुलाई 2025 को रखा गया है।

रजिस्ट्रेशन फार्म भरने से पूर्व निम्नलिखित बातों पर अवश्य ध्यान दे।

रजिस्ट्रेशन के लिये 2 तरह के फार्म हैं ।

**1. Student Registration Form** 👇

Scan Me

दिनांक 29 जुलाई से 30 जुलाई-2025

- प्रत्येक प्रतिभागी (विद्यार्थी) के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क ₹ 1,500 है। प्रतिभागी के साथ में पधारने वाले अतिथिगण में अधिकतम एक वयस्क और एक बच्चे के लिए सशुल्क आवास व्यवस्था की जा सकेगी।

- अतिथियों में बच्चों की श्रेणी - उम्र 5 से 12 उम्र तक और वयस्क की श्रेणी - उम्र 12 वर्ष से अधिक मानी गई है। प्रत्येक अतिथि बच्चे के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क ₹ 1,500 रहेगा और वयस्क अतिथि के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क ₹ 2,500 रहेगा।
- आप विज्ञ उपाधि धारक, जैन विद्या परीक्षा वरीयता, आगम मंथन प्रतियोगिता वरीयता एवं सम्यक् दर्शन कार्यशाला वरीयता प्राप्त हो तो आपको Student Registration Form भरना है। यदि आप एक से अधिक कैटेगरी में वरीयता प्राप्त हो तो इसी फार्म में जानकारी भरें।आपके साथ आने वाले गेस्ट की जानकारी भी इसी फार्म में भरे। संकाय कार्यकर्ता ये फार्म ना भरे।

**2. Karyakarta Registration Form👇**

दिनांक 28 जुलाई से 30 जुलाई-2025

प्रत्येक संकाय कार्यकर्ता के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क ₹ 1,500 है। प्रत्येक संकाय कार्यकर्ता के साथ में पधारने वाले अतिथिगण में अधिकतम एक वयस्क और एक बच्चे के लिए सशुल्क आवास व्यवस्था की जा सकेगी। अतिथियों में बच्चों की श्रेणी - उम्र 5 से 12 उम्र तक और वयस्क की श्रेणी - उम्र 12 वर्ष से अधिक मानी गई है। प्रत्येक अतिथि बच्चे के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क ₹ 1,500 रहेगा और वयस्क अतिथि के लिए रजिस्ट्रेशन शुल्क ₹ 2,500 रहेगा।

- आप संकाय के पदाधिकारी (जैन विद्या परीक्षा, आगम मंथन प्रतियोगिता, सम्यक दर्शन कार्यशाला, साहित्य मंथन प्रतियोगिता, जीव अजीव कार्यशाला, जाने तेरापंथ इतिहास को प्रतियोगिता एवं अध्यापन टीम) हो तो आपको कार्यकर्ता रजिस्ट्रेशन फार्म भरना है।

**यदि आप कार्यकर्ता के साथ विज्ञ, वरीयता (किसी भी ग्रुप में) प्राप्त हो तो इसी फार्म में ही आपको जानकारी भरनी है। आपके साथ आने वाले गेस्ट की जानकारी भी इसी फार्म में भरें।**

3.आप दोनो में से किसी भी कैटेगरी में हो आपको सिर्फ़ एक ही फार्म भरना है।

फार्म पूरी जागरूकता के साथ भरें।यदि आप किसी जानकारी को miss करते है तो आपका उस कैटेगिरी के सम्मान से वंचित रह जाना पड़ सकता है।

फार्म भरने की अंतिम तारीख 20th June 2025 है। बिना रजिस्ट्रेशन के हम आपका सम्मान एवं आवास व्यवस्था आदि करने में असमर्थ होंगे। अतः आप सभी से निवेदन है कि आप उपयुक्त रजिस्ट्रेशन फार्म शीघ्र भरकर हमें सहयोग करें।

विस्तृत जानकारी के लिए लाडनूं कार्यालय से संपर्क करें।
📱9785442373, 9694442373, 9784762373

**दीक्षांत समारोह टीम**

Jain Vishva Bharati

# ADARSH SAHITYA VIBHAG

books@jvbharati.org
+91-87420 04849, 87420 04949, 77340 04949
www.books.jvbharati.org

Jvbpublications

50 प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष

## ध्यान को समझो, ध्यान को अपनाओ

# SAHITYA MANTHAN CONTEST

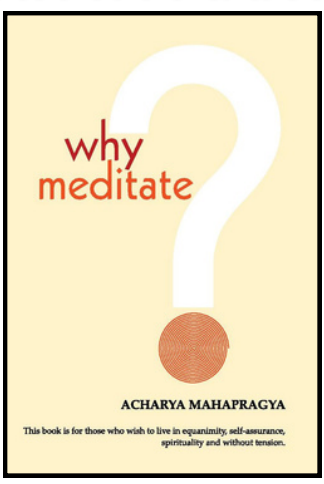

भाग लें और ध्यान की इस यात्रा में जुड़ें, साथ ही आकर्षक पुरस्कार जीतने का मौका पाएं!

Sponsored by - **Smt. Revantidevi Parakh**
(Shri Dungargarh, Siliguri)

**Supported by :-**

+91 87420 04949, 77340 04949 Contest@jvbharati.org

# Jain Vishva Bharati

Dedicated to Humanity and Jainism Since 1971

# Sambodhi E-Library

## Readable & Audible Mobile Application & Much More...

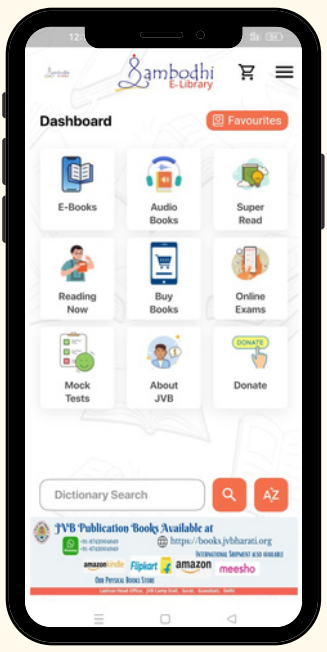


DOWNLOAD

## About JVB

## Readable E-Books

## Audible Books

## Online Exams & Mock Test

## Buy Hard Copies

## Practice Online Exam

## Shareable Quotes

## Articles

SEVABHAVI™

DEDICATED TO AYURVED

**सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला**, वर्ष 1983 में स्थापित, एक सामाजिक सेवा से प्रेरित आयुर्वेदिक संस्था है, जिसका उद्देश्य आयुर्वेद की चमत्कारी औषधियों के माध्यम से जनसामान्य को स्वास्थ्य लाभ पहुँचाना है। यह संस्था जैन विश्व भारती, लाडनूं के हरित परिसर में स्थित है, जहाँ आधुनिक मशीनरी और आकर्षक पैकेजिंग के साथ औषधियों का निर्माण किया जाता है। आचार्य श्री महाश्रमण जी के आशीर्वाद और जैन विश्व भारती के मार्गदर्शन में, सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला समाजहित में ओपीडी सेवाएं भी न्यूनतम लागत पर संचालित करती है।

SCAN ME

+91-6367992543

https://sevabhavi.in

## सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

- आयुर्वेद अपनाएं सुखी जीवन पाएं

# आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केंद्र लाडनूं, राजस्थान

करें एक नई दिशा में प्रस्थान!

- प्रेक्षाध्यान आवासीय शिविर
- प्रेक्षा प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम
- प्रेक्षाध्यान सम्बन्धता केंद्र
- प्रेक्षाध्यान कार्यशालाएं
- प्रेक्षावाहिनियाँ

## बालक-अभिभावक प्रेक्षाध्यान कार्यशाला

Child Age group
8 to 15

The Camp lovingly shapes the future gen by Building

- Strong Energetic persoanlity
- Well balanced individual
- Creativity by heart
- Higher mental ability

THROUGH THE POWERFUL TECHNIQUES OF PREKSHA MEDITAION

17-19 May

JOIN US

ACHARYA TULSI INTERNATIONAL PREKSHA MEDITATION CENTRE, JAIN VISHVA BHARATI

For Registration - SCAN ME!

+91 8233344482

prekshadhyan.com